21

सामाजिक विपथन

हम सभी समाज में रहते हैं। समाज के बिना हम नहीं रह सकते क्योंकि जीवन से लेकर मृत्यु तक हम इस पर निर्भर रहते हैं। सभी समाजों के अपने प्रतिमान एवं मूल्य होते हैं। समाज में रहने के लिए हम कुछ प्रतिमानों तथा मूल्यों का पालन करते हैं। माड्यूल II में आपने प्रतिमानों तथा मूल्यों के संबंध में पढ़ा है। समाज हमसे मूल्यों तथा प्रतिमानों की अपेक्षा करता है। यह एक सामाजिक स्वीकृति होती है तथा समाज के प्रत्येक सदस्य से यह अपेक्षा की जाती हे कि वे इसका पालन करें। परंतु समाज के कुछ सदस्यों का व्यवहार सामाजिक अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं होता है। इस कारण व्यक्ति के व्यवहार में सामाजिक विपथन आ जाता है। अपराध, स्कूल से गैरहाजिर रहना, आवारगी, कामचोरी, मदिरापान या अन्य प्रकार के नशे की लत, सामाजिक विपथन के उदाहरण हैं।

इस पाठ में हम इस प्रकार के सामाजिक विचलन के संबंध में अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि:

- अपराध क्या है? इसका वर्णन कर सकेंगे;
- आवारगी क्या है? इसके रूपों एवं कारणों की व्याख्या कर सकेंगे; और
- मदिरापान एवं नशे की लत के बारे में समझा सकेंगे।

21.1 अपराध

सामाजिक विपथन एक ऐसा आचरण है जो समाज के प्रतिमानों, मूल्यों एवं अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं होता है। इन आचरणों की सामाजिक स्वीकृति नहीं होती है। इन्हें असामाजिक या गैरसामाजिक कहा जाता है।

आपने अपराध तथा अपराधियों के बारे में सुना होगा। आपने शायद टीवी अथवा सिनेमा में अपराध एवं अपराधियों को देखा भी होगा। अपराध एक असामाजिक व्यवहार है। समाज में कुछ आचार ऐसे होते हैं जिसकी सामाजिक स्वीकृति नहीं होती है। समाज अपने सदस्यों से ऐसे व्यवहार की अपेक्षा नहीं करता है। आत्महत्या, हत्या, चोरी, डकैती, बलात्कार तथा आगजनी इसी प्रकार के सामाजिक व्यवहार में आते हैं। इन्हें असामाजिक आचरण कहा जाता है। इनसे समाज असंगठित होता है। अत: अपराध एक सामाजिक रोग है। यह, ''समाज क्या अपेक्षा करता है तथा कुछ सदस्य क्या चाहते हैं,'' इसके संघर्ष से उत्पन्न होता है। दूसरे शब्दों में जब कुछ सदस्य समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों के अनुकूल व्यवहार नहीं करते, तब अपराध की स्थिति उत्पन्न होती है। वे समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों की परवाह नहीं करते। वे असामाजिक तरीके से आचरण करना आरंभ कर देते हैं। अपराध दबी हुई इच्छा को पूरा करता है। अपराध एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति बदला लेता है, धन तथा संपति की छीना-छपटी करता है, अत्याचार करता है, यहाँ तक कि अपने दुश्मनों की हत्या भी कर डालता है और अपनी अपूर्ण इच्छाओं को पूरा करता है। अपराधियों को सजा देने का भी प्रावधान है।

कोई जन्म से ही अपराधी नहीं होता है। वे बनाए जाते हैं। यह समाज ही होता है जो किसी व्यक्ति को अपराधी बनाता है। जब समाज किसी व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करने में तथा उसकी जरूरतों को पूरा करने में असफल होता है तो वह व्यक्ति अपराध की शरण लेता है। आजकल अपराधियों को अपराध करने के लिए नई तकनीकों द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है। आधुनिक हथियारों का इस्तेमाल संगठित अपराधों जैसे- डकैती तथा उग्रवादी हमलों इत्यादि के लिए किया जाता है। हमारे समाज में पेशेवर हत्यारे भी हैं। हमारे समाज में सफेदपोश अपराधी भी मौजूद हैं।

अपराध के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, प्राकृतिक तथा मनोवैज्ञानिक कारण हैं। यह जनसंख्या विस्फोट, उद्योगीकरण तथा आधुनिकीकरण से भी संबंधित है। हमारे समाज में सभी जातियों को समान दर्जा नहीं प्राप्त है। संपत्ति के बंटवारे के समय भाइयों के बीच द्वन्द्व हो जाता है। इसमें अपराध तक हो जाते हैं। संसाधनों का

असमान वितरण भी समाज में अपराधिक प्रवृत्तियों को जन्म देता है। राजनीति का भी अपराधीकरण होता है तथा अपराधियों एवं अपराधों का राजनीतिकरण हो रहा है। साम्प्रदायिक दंगों का सीधा संबंध अपराधों जैसे- लूटपाट, डकैती, आगजनी, हत्या तथा बलात्कार आदि से होता है। विकृत मानसिकता के व्यक्ति अपराध द्वारा अपनी इच्छा पूरी करते हैं। असामान्य व्यक्ति अपराध करते हैं। शहरीकरण, उद्योगीकरण तथा आधुनिकीकरण ने लूट, डकैती, हत्या तथा यौन हिंसा को जन्म दिया है। अश्लील पुस्तकों को पढ़ने से भी आपराधिक प्रवृति को बढ़ावा मिलता है। न्यायपालिका एवं सजा देने वाली संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार ने आपराधिक वारदातों में वृद्धि की है।

पाठगत प्रश्न 21.1

निम्नलिखित में सत्य तथा असत्य पर चिह्न लगाएँ:

1. अपराध को सामाजिक स्वीकृति है। (सत्य/असत्य)
2. अपराध एक असामाजिक आचरण है। (सत्य/असत्य)
3. अपराध दबी हुई इच्छा को पूरा करने का तरीका/माध्यम है। (सत्य/असत्य)
4. समाज क्या चाहता है, और व्यक्ति क्या चाहता है, इसके बीच संघर्ष के कारण अपराध होता है। (सत्य/असत्य)
5. अपराधी जन्म नहीं लेते, बनाए जाते हैं। (सत्य/असत्य)

21.2 भगोड़ापन

आपने स्कूल से गैरहाजिर रहने वालों या भगोड़ेपन बारे में सुना होगा। भगोड़ापन शब्द उन बच्चों के बारे में व्यवहार होता है जो बिना किसी सूचना के स्कूल से अनुपस्थित रहते हैं। यह एक ऐसा आचरण है जिसमें बगैर स्कूल तथा माता-पिता की आज्ञा के विद्यार्थी स्कूल से गैरहाजिर रहता है। स्कूल से गैरहाजिर रहने वाले बच्चे स्वयं को असामाजिक कार्यों में संलग्न कर लेते हैं, जैसे - आवारगी, कामचोरी तथा जुआ खेलना इत्यादि।

स्कूल से अनुपस्थित रहने वाले बच्चे स्कूल की समयावधि में न तो स्कूल जाते हैं और न ही घर जाते हैं। वे ताश खेलते हैं, सिनेमा में जाते हैं, होटलों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, बाजार तथा भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाते हैं। वे आवारा की तरह बर्ताव

करते हैं। वे जनता तथा पुलिस से दंडित भी होते हैं। इस तरह से वह अपराधियों के संपर्क में भी आते हैं तथा किशोर अपराधी बन जाते हैं। अत: भगोड़ापन से आवारगी की प्रवृति जन्म लेती है और किशोर-अपराधी तैयार होते हैं।

स्कूल से भागने वाले बच्चे अनेक तरह के होते हैं। कुछ कभी भी स्कूल नहीं जाते हैं। कुछ यदा-कदा स्कूल जाते हैं। कुछ स्कूल तो जाते हैं परंतु कक्षा में नहीं जाते। कुछ सिर्फ हाजिरी के लिए जाते हैं तथा मध्याह्न अवकाश में स्कूल से चले जाते हैं।

स्कूल से भागने से वैयक्तिक असंतुलन, सामाजिक-असमरसता, कुसंगति, दुराचरण, कामचोरी, अनैतिकता एवं चरित्रहीनता को प्रोत्साहन मिलता है। भगोड़ापन के कुछ प्रमुख कारण हैं- गरीबी, समाज में नीचा स्थान, परिवार की दयनीय स्थिति, अनाकर्षक रूप-रंग, हीनता की भावना, सहपाठियों से लड़ाई-झगड़ा, गलत संगति, शिक्षक तथा माता-पिता का अनुचित व्यवहार, किसी बात को समझने की अयोग्यता तथा परीक्षा का भय इत्यादि। गरीब परिवारों के बच्चे यह समझते हैं कि वह अमीर परिवारों के बच्चे के साथ तालमेल नहीं बिठा पाएँगे। इस तरह की सोच, हीनता की भावना बढ़ाती है तथा वे स्कूल छोड़ना आरंभ कर देते हैं। कुछ बच्चे गलत संगति में चले जाते हैं। वे सिनेमा देखने या बाजारों में घूमने के लिए स्कूल छोड़ देते हैं तथा आवारा की तरह व्यवहार करते हैं।

पाठगत प्रश्न 21.2

कोष्ठक में दिए गए शब्दों से खाली स्थान को भरें:

1. भगोड़ापन एक ऐसा आचरण है जिसे सामाजिक स्वीकृति ..... है। (प्राप्त/नहीं प्राप्त)
2. भगोड़े ..... गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। (सामाजिक/असामाजिक)
3. भगोड़ापन शिक्षा के विकास के लिए ..... है। (हानि रहति/ हानिकर)
4. भगोड़ बच्चे आवारा एवं अपराधी ..... हैं। (बनते / नहीं बनते)
5. भगोड़े बच्चे नियमित रूप से स्कूल ..... है। (जाते/ नहीं जाते)

21.3 आवारगी

आवारगी एक ऐसा विकृत सामाजिक आचरण है जो उन बच्चों में पाया जाता है जो निरुद्देश्य इधर-उधर घूमते रहते हैं। वे अपने असामाजिक कार्यों द्वारा समाज के अन्य सदस्यों के लिए समस्याएँ उत्पन्न करते हैं।

आपने 'आवारगी' शब्द को सुना होगा। इस प्रवृति से ग्रस्त बच्चे बगैर किसी उद्देश्य के इधर-उधर घूमते हैं। वे सड़कों पर बिना किसी उद्देश्य के घूमते रहते हैं। वे सड़कों पर चलने वाले व्यक्तियों विशेषकर लड़कियों पर गंदी फब्तियाँ कसते हैं। वे किसी भी व्यक्ति को अकारण ही गालियाँ देते हैं। वे किसी से भी बिना कारण के झगड़ा भी कर लेते हैं। उनका अपने परिवार के साथ कोई संबंध नहीं रहता है। उन्हें पिटाई का, जेल जाने का यहाँ तक कि मृत्यु का भी डर नहीं रहता है। उनके माता-पिता उनसे संबंध तोड़ लेते हैं। उनके जेल जाने पर भी उनके माता-पिता उन्हें रिहा नहीं कराते हैं। वे पड़ोसियों अथवा समुदाय के अन्य लोगों की शिकायत पर भी ध्यान नहीं देते हैं।

आवारा लोगों को परिवार, समाज तथा समुदाय के प्रति जिम्मेदारी का एहसास नहीं होता है। वे समाज पर एक बोझ हैं। इस तरह के लोग सिनेमा हॉल में, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, पार्क, झुग्गी बस्तियों, बाजारों, स्कूल, कॉलेज के गेट पर, सब्जी बाजार में, भीड़ वाली जगहों पर, धार्मिक जलूसों, तथा राजनीतिक जलूसों में सदैव पाए जाते हैं। वह चोरी, डकैती, भीख मांगना, जुआ, तथा वेश्यावृति, पाकेटमारी तथा लूट खसोट से अपनी जिंदगी चलाते हैं। ऐसा नहीं है कि इस तरह के लोग अपना व्यवहार बदल नहीं सकते। अनेकों आवारा लोगों ने अपने परिवार, समुदाय, समाज तथा पुलिस के दबाव में अपना व्यवहार बदला है।

आवारगी की प्रवृति या व्यवहार उत्पन्न होने के मुख्य कारण हैं- परिवार की पृष्ठभूमि, माता-पिता का स्वभाव, गलत संगति, जाति प्रथा, समाज में नीचा स्थान तथा रिश्तेदारों का अभद्र व्यवहार।

पाठगत प्रश्न 21.3

निम्नलिखित में सही का चयन कीजिए:

1. आवारगी संबंधित है:

   (अ) पैसा कमाने से (ब) शिक्षा प्राप्त करने से

   (स) अपना स्तर बढ़ाने से (स) सामाजिक रोगों से

2. आवारगी को

(अ) समाज की स्वीकृति होती है (ब) प्रशासन का सहयोग रहता है

(स) जनता का सहयोग रहता है (द) समाज की स्वीकृति नहीं होती है।

3. आवारा लोग संलग्न रहते हैं:

(अ) समाज का स्तर बढ़ाने में (ब) शिक्षा के विकास में

(स) सामाजिक संरचना में (द) असामाजिक आचरण में

4. आवारा लोग :

(अ) हिस्सेदार होते हैं परिवार की जिम्मेदारी में

(ब) भाग लेते हैं सामाजिक कर्तव्यों में

(स) लगे रहते हैं धार्मिक कार्यों में

(द) समाज में कोई उत्तरदायित्व नहीं निभाते।

5. आवारा जीवन यापन करते हैं:

(अ) बाल श्रम से (ब) छोटे कार्यों (मजदूरी) से

(स) कूड़ा बीन कर (द) भीख मांगकर तथा गैरकानूनी वसूली से

21.4 किशोर अपराधी

आपने किसी बच्चे द्वारा किए गए किसी अपराध के बारे में सुना होगा। आपने शायद टीवी धारावाहिकों में अथवा सिनेमा में किसी बच्चे को अपराध करते हुए देखा भी होगा। बच्चों द्वारा किए गए अपराधों को बाल अपराध या किशोर-अपराध कहते हैं। किशोर-अपराध को सामाजिक तथा कानूनी नजरिए से देखा जा सकता है। सामाजिक दृष्टिकोण से, किसी बालक द्वारा समाज के प्रतिमानों, मूल्यों, रिवाजों एवं परम्पराओं के प्रति अनादर, किशोर-अपराध कहा जाता है। परंतु कानूनी दृष्टिकोण से, सरकार के द्वारा स्थापित कानूनों को, किसी बालक द्वारा तोड़ने को किशोर अपराध कहते हैं। वे बालक जो किशोर अपराध में संलग्न रहते हैं 'किशोर अपराधी' कहलाते हैं।

किशोर-अपराध, एक विकृत सामाजिक आचरण है, जिसमें कोई बच्चा अपराध करता है। यह एक सामाजिक रोग है जो सामाजिक-विघटन को जन्म देता है।

अपराध तथा किशोर अपराध दोनों असामाजिक आचरण हैं। दोनों सामाजिक एवं व्यक्तिगत विक्षोभ पैदा करते हैं। इन दोनों अवधारणाओं के बीच अंतर है। अपराध

वयस्कों द्वारा किए जाते हैं जब कि किशोर अपराध बालक द्वारा किया जाता है। हमारे देश में, 7 से 17 वर्ष की उम्र के बालक द्वारा किया गया अपराध किशोर-अपराध कहलाता है।

किशोर-अपराधियों को सुधारा जाता है तथा पुनर्वासित किया जाता है जबकि व्यस्क अपराधियों को दंडित किया जाता है।

किशोर-अपराधी, लूट, चोरी, डकैती, वैश्यावृत्ति, बलात्कार, मार पीट, हत्या तथा प्रतिशोध जैसे अपराधों में संलग्न रहते हैं। वे शराब पीते हैं तथा धूम्रपान करते हैं। वे लूट, चोरी, डकैती तथा हत्या से पैसा प्राप्त करते हैं तथा अनेक दुराचारों पर खर्च कर अपराध के लिए आधुनिक शस्त्रों को हासिल करते हैं।

किशोर अपराधी समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों की परवाह नहीं करते हैं। उन्हें मृत्यु से भी डर नहीं होता है। उनका अपने माता-पिता से भी संबंध नहीं रहता है। ऐसा नहीं है कि किशोर अपराधियों का आचरण बदल नहीं सकता है। उचित रूप से व्यवहार करने पर काफी ऐसे किशोर अपराधी हैं जिनका व्यवहार बदला है तथा वे सामान्य जीवन जीने लगे हैं। परंतु कुछ किशोर अपराधी बड़े अपराधियों के संपर्क में आ जाते हैं। वे उनके गिरोह में शामिल हो जाते हैं। आगे चलकर जिंदगी में वे कुख्यात अपराधी बन जाते हैं।

कोई भी बालक जन्म से अपराधी नहीं होता है। बल्कि समाज का व्यवहार उसको अपराधी बना देता है। माता-पिता का दुर्व्यवहार, सौतेले माता या पिता, रिश्तेदार, पड़ोसी तथा समुदाय के सदस्य भी अपराधी बनाने में जिम्मेदार होते हैं। गरीबी तथा मूलभूत सुविधाओं का अभाव भी किशोर अपराध को जन्म देता है। पैतृक संपत्ति में हिस्सेदारी से वंचित करने से भी किशोर अपराधी बनते हैं। सहपाठियों एवं शिक्षकों का अभद्र व्यवहार भी किशोर अपराध का कारण बन सकता है। शारीरिक विकार भी किशोर अपराधी बनने का उत्तरदायी होता है। उद्योगीकरण, शहरीकरण तथा आधुनिकीकरण ने हमारे देश में किशोर अपराध की घटना को बढ़ाया है।

पाठगत प्रश्न 21.4

निम्नलिखित पर हाँ या नहीं का निशान लगाएँ:

1. किशोर अपराध, बच्चों द्वारा किया जाने वाला असामाजिक आचरण है। (हाँ/नहीं)

2. सामाजिक दृष्टिकोण से बालक द्वारा प्रतिमानों एवं मूल्यों का अनादर किशोर अपराध है। (हाँ/नहीं)

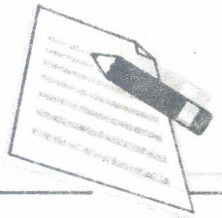

Notes

3. कानूनी दृष्टिकोण से, कानून की नजर में बच्चों द्वारा किया गया अपराध, किशोर अपराध है। (हाँ/नहीं)
4. किशोर अपराधियों को सुधारा जाता है एवं पुनर्वासित किया जाता है। (हाँ/नहीं)
5. कोई भी बालक जन्म से अपराधी नहीं होता है। (हाँ/नहीं)

21.5 मद्यव्यसनता

आपने मद्यव्यसनता अथवा मदिरा सेवन की लत के बारे में सुना होगा। शराब पीकर सड़क पर पड़े हुए कुछ लोगों को भी आपने देखा होगा। मद्यव्यसनता का सामान्य अर्थ होता है आदत या लत के रूप में शराब का सेवन करना। शराब पीना उतना ही पुराना है जितनी सभ्यता। शायद ही कोई ऐसा देश, समुदाय या युग होगा जिसमें शराब पीना प्रचलित नहीं हो।

ऐसे भी समाज हैं जिसमें स्थानीय बियर पीने की छूट है, जैसे- जनजातीय समाज। जनजातीय लोग 'हड़िया' (चावल की बीयर) बनाते हैं। पुरुष, महिला और बच्चे त्योहार अथवा समारोह में सम्मिलित रूप से 'हड़िया' पीते हैं। वे 'महुआ शराब' भी बनाते हैं। हिन्दू संस्कृति में, पुरुषों को 'भाँग' तथा महुआ शराब पीने की इजाजत रहती है। आजकल वैवाहिक समारोहों में तथा पार्टियों में शराब पीना एक प्रचलन हो गया है। गरीब व्यक्ति ताड़ी तथा निम्न कोटि की शराब पीते हैं, वहीं अमीर व्यक्ति विदेश में निर्मित अच्छी किस्म की शराब- व्हिस्की, रम तथा स्कॉच पीते हैं। शराब पीना उन प्रदेशों के व्यक्तियों के लिए आवश्यक हो सकता हैं जहाँ ठंड अधिक पड़ती है। वे रात के खाने के पहले अवश्य शराब पीते हैं। सेना, विदेशी राजनयिक, डॉक्टर, प्रतिष्ठित-वकीलों, उद्योगपतियों, तथा नौकरशाहों द्वारा शराब पीना एक स्वीकार्य आचरण है। त्यौहारों में, समारोहों में, विवाह समारोहों तथा पार्टियों में शराब का सेवन प्रतिष्ठा एवं धनाढ्यता का प्रतीक है। शराब पीने वाले यह सोचते हैं कि पीने से व्यक्तिगत सुख मिलता है तथा भावनाएँ बढ़ती हैं। अत: कुछ अवसरों पर शराब पीना सामाजिक तौर पर स्वीकार्य है। परंतु सामाजिक विपथन के रूप में मद्यव्यसनता (शराब की लत) को सामाजिक स्वीकृति नहीं है। यह सामाजिक रूप से निषिद्ध है। इसे एक गंदी आदत के रूप में समझा जाता है जिससे व्यक्तिगत विघटन, पारिवारिक विघटन तथा सामाजिक विघटन होता है।

जब कोई व्यक्ति अत्यधिक शराब का आदी हो जाता है तब वह शराबी कहा जाता है। वह अपना सम्मान न सिर्फ अपने परिवार में बल्कि समाज में भी खो देता है। वह

अपने बच्चों की देख-भाल नहीं करता है। वह अपनी पत्नी को उसके आभूषणों को हासिल करने के लिए पीटता है।

शराब पीने के लिए वह आभूषणों को बेच डालता है। असमय ही उनकी मृत्यु हो जाती है। ऐसे लोग अपनी जमीन एवं संपति तक बेच डालते हैं। वे अपने बच्चों, पत्नी तथा परिवार के अन्य सदस्यों को उनके भाग्य पर छोड़ देते हैं। वे अनेक प्रकार की परेशानियाँ खड़ी कर देते हैं। शराबी चोरी, डकैती, लूट, यौन हिंसा, मार-पीट, हत्या तथा आत्महत्या तक कर सकते हैं।

व्यक्ति समारोहों, त्यौहारों, पार्टियों तथा सभाओं में आनंद के लिए मदिरा का सेवन करता है। वे निराशा तथा तनाव मुक्त होने के लिए भी शराब का सेवन करते हैं। कुछ थकान मिटाने के लिए भी पीते हैं तथा कुछ लोग अपनी प्रतिष्ठा एवं संपन्नता का प्रदर्शन करने के लिए पीते हैं। कुछ लोग सिर्फ फैशन के लिए पीते हैं। परंतु, जब वे इसकी आदत के शिकार हो जाते हैं तब वे किसी जिम्मेदारी या कर्तव्य का पालन नहीं करते हैं। वे सामाजिक प्रतिमानों एवं मूल्यों से विचलित हो जाते हैं। वे असामाजिक आचरणों में लिप्त हो जाते हैं।

आबकारी विभाग शराब के उत्पादन एवं विक्रय को नियंत्रित करता है। परंतु सरकार की नीतियों एवं उद्योगपतियों तथा व्यापारियों का दबाव शराबबंदी के रास्ते में रुकावट है। उद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण ने शराब के उपभोग को बढ़ाया है। सरकार के लिए यह आमदनी का अच्छा साधन है।

पाठगत प्रश्न 21.5

निम्नलिखित का मिलान करें

'अ'	'ब'
1. मद्यव्यसनता	(a) व्यक्तिगत, सामाजिक एवं सामाजिक विघटन है
2. स्थानीय बियर पीना स्वीकृत है	(b) वहीं अमीर लोग विदेशों में निर्मित अच्छी शराब पीते हैं।
3. शराब की लत वाले व्यक्ति	(c) लगभग सभी समाजों में पाये जाते हैं।
4. गरीब लोग निम्न दर्जे की शराब पीते हैं	(d) सामाजिक मिलन समारोहों, त्यौहारों एवं खास अवसरों पर

5. मद्यव्यसनता का परिणाम होता है (e) शराब पीने की आदत

21.6 मादक पदार्थ (ड्रग) व्यसनी

क्या आप जानते हैं, ड्रग व्यसन क्या है? शराब के अलावा अन्य मादक द्रव्यों का व्यसन (आदत) के रूप में सेवन करना ड्रग व्यसन (ड्रग की लत) है। ड्रग व्यसन हमारे देश के सभी भागों में, एक या दूसरे रूप में व्याप्त है। हमारे देश में 70 प्रतिशत लोग ड्रग की आदत के शिकार हैं। सिर्फ दिल्ली में 25 प्रतिशत लोग ड्रग व्यसनी हैं। यहाँ लोगों को मुख्यत: तंबाकू, गाँजा, भाँग, चरस तथा अफीम की आदत है। तंबाकू, गाँजा, भाँग तथा चरस के पौधे अनंत काल से हमारे देश में पाए जाते हैं। इन, मादक-द्रव्यों का समारोहों एवं त्यौहारों पर आनंद के लिए सेवन करना सांस्कृतिक रूप से स्वीकृत था। इनका व्यवहार दवाओं के लिए भी होता है। परंतु आज काफी संख्या में व्यक्ति इनकी आदत के शिकार हो गए हैं। बगैर इसका सेवन किए वे रह नहीं सकते हैं। पारंपरिक मादक द्रव्यों के अतिरिक्त, हमारे देश का युवा वर्ग कई आधुनिक ड्रगों जैसे- हेरोईन, मोरफे स्मैक, मॅण्ड्रेक्स, तथा एल एस डी. का आदी हो गया है।

आदतन या नियमित ड्रग के सेवन को ड्रग व्यसन कहते हैं। दो प्रकार के ड्रग, जिसके हमारे देश के लोग आदी हैं वे हैं- पारंपरिक ड्रग एवं आधुनिक ड्रग। तंबाकू, गाँजा, भाँग, चरस तथा अफीम पारंपरिक ड्रग हैं। वही हेरोईन, मोरफीन, हशीश, स्मैक, मॅण्ड्रेक्स तथा एल एस डी. आधुनिक ड्रग हैं।

ड्रग का व्यसन कई रूपों में हानिकारक है। यह व्यक्ति को मानसिक रूप से कमजोर बना देता है। इससे असमय ही मृत्यु हो जाती है। यह वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक विघटन का कारण है। यह प्रशासन के लिए समस्या उत्पन्न कर देता है। ड्रग व्यसन एवं अपराध का भी निकट संबंध है। ड्रग व्यसनी व्यक्ति अनेक अपराधों जैसे - आत्महत्या, लड़ाई-झगड़ा, यौन हिंसा तथा हत्या इत्यादि में लिप्त पाये जाते हैं।

ड्रग व्यसन ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों दोनों में प्रचलित है। ग्रामीण इलाकों में काफी युवा तंबाकू, गाँजा, भाँग, सिगरेट तथा ताड़ी आदि के आदी हैं। शहरी क्षेत्रों में युवा वर्ग चरस, अफीम, हेरोईन, मोरफीन, हशिश, स्मैक, मॅण्ड्रेक्स तथा एल एस डी. का आदी है। इसके अतिरिक्त सिगरेट, तंबाकू, गाँजा, भाँग का भी व्यसन है।

ग्रामीण जनता आधुनिक ड्रग के संबंध में नहीं जानती हैं। परंतु धीरे-धीरे आधुनिक ड्रग का व्यसन ग्रामीण क्षेत्रों में भी फैल रहा है।

हमारे देश में युवा वर्ग ड्रग-व्यसन की शुरूआत फैशन के लिए, गलत संगति में,

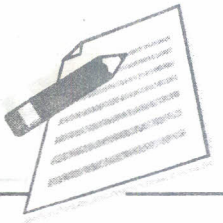

Notes

हताशा मिटाने के लिए अथवा आनंद प्राप्त करने के लिए करता है। गरीबी तथा बेरोजगारी के प्रभाव स्वरूप भी वह ड्रग व्यसन प्रारंभ कर देता है। टीवी अथवा सिनेमा में देखकर भी वह आधुनिक ड्रग व्यसन की ओर आकर्षित हो जाते हैं।

गरीब तथा अमीर दोनों पारिवारिक पृष्ठभूमि के लोग इसमें शामिल हैं। अशिक्षित के अलावा शिक्षित युवा भी इस व्यसन का शिकार हैं आज कल युवा महिलाएँ भी इस व्यसन का शिकार हो गई हैं।

परंतु सरकार के लिए यह आय का स्रोत है। राजनेताओं एवं उद्योगपतियों का दबाव भी ड्रग व्यसन के नियंत्रण में रुकावट है। इस प्रकार के मादक पदार्थों की हमारे देश में काफी बड़े पैमाने पर तस्करी होती है। कुख्यात अंडरवर्ल्ड अपराधी इन मादक द्रव्यों की तस्करी कर करोड़ों रुपया कमा रहे हैं। वे आबकारी विभाग के अधिकारियों को मोटी रिश्वत देते हैं। वे राजनीतिक दलों का भी चंदा देते हैं तथा चुनाव के वक्त उनकी मदद करते हैं। राजनेता तथा नौकरशाह उन्हें संरक्षण प्रदान करते हैं।

पाठगत प्रश्न 21.6

निम्नलिखित का मिलान करें:

'अ'	'ब'
1. ड्रग व्यसनी	(a) हमारे देश में काफी बड़े पैमान पर होता है।
2. तंबाकू, गाँजा, भाँग, चरस तथा अफीम	(b) आधुनिक ड्रग है।
3. हेरोइन, स्मैक, मॅण्ड्रेक्स तथा एल एस डी	(c) मानसिक अवरूढ़ता होती है।
4. ड्रग की तस्करी	(d) पारंपरिक ड्रग है।
5. ड्रग व्यसन से	(e) आदतन ड्रग उपयोग करने वाले को कहा जाता है।

आपने क्या सीखा

- सामाजिक विचलन के अन्तर्गत वैसे आचरण आते हैं जो समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों के अनुकूल नहीं होते हैं। इन आचरणों को असामाजिक कहा जाता है तथा इन्हें सामाजिक स्वीकृति नहीं प्राप्त होती है।
- वैसे आचरण जो समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों के अनुकूल नहीं होते साथ ही राज्य के कानून के अनुसार नहीं हाते हैं, अपराध कहा जाता है। अपराधियों को अपराध के लिए दंडित किया जाता है।
- वैसा आचरण जिसमें बच्चा बगैर माता-पिता या स्कूल के किसी अधिकारी की आज्ञा के स्कूल से अनुपस्थित रहता है, भगोड़ापन कहलाता है। भगोड़ापन से अंततोगत्वा अपराध, जुआ, शराब की लत तथा ड्रग की लत ही उत्पन्न होती है।
- वैसा आचरण जिसमें बच्चे निरुद्देश्य इधर-उधर घूमते रहते हैं आवारगी कहा जाता है। आवारगी की प्रवृत्ति लड़ाई-झगड़ा, अपराध, शराब की आदत तथा ड्रग व्यसन को बढ़ावा देती है। किसी बच्चे द्वारा किया जाने वाला अपराध 'किशोर अपराध' कहा जाता है। यह सामाजिक विघटन को जन्म देता है। किशोर अपराधियों को सजा नहीं दी जाती। उन्हें पुनर्वासित किया जाता है।
- विभिन्न प्रकार के शराब का आदतन व्यवहार मद्यव्यसन कहलाता है। यह वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक विघटन को जन्म देता है।
- अपराध, भगोड़ेपन, आवारगी, किशोर-अपराध, कामचोरी तथा मद्यव्यसनता एवं ड्रग व्यसन आदि को नियंत्रित करने के लिए कई संस्थाएँ हैं।

शब्दावली

मद्यव्यसनता	-	शराब का आदतन उपयोग
अपराध	-	समाज तथा राज्य के कानून की दृष्टि से अस्वीकार्य आचरण
अपराधी	-	अपराध में संलग्न व्यक्ति
किशोर-अपराध	-	किशोरों द्वारा किया गया अपराध

किशोर-अपराधी – 7 से 17 साल की उम्र के अपराधी बच्चे

भगोड़ापन – बच्चे की स्कूल से भागने की आदत

भगोड़े बच्चे – वैसे बच्चे जो माता-पिता या शिक्षक को सूचना दिये बगैर स्कूल से अनुपस्थित रहते हैं।

सामाजिक विपथन – समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों से भटकाव

आवारगी – निरुद्देश्य सड़कों पर इधर-उधर घूमना

पाठांत प्रश्न

1. सामाजिक विपथन क्या है?
2. अपराध से आप क्या समझते हैं? अपराध के पाँच कारण बताइए।
3. भगोड़े से आप क्या समझते हैं? भगोड़ेपन के पाँच कारण बातइये।
4. आवारगी क्या होती है? आवारगी के पाँच कारण बताइये।
5. बाल-अपराध क्या है? बाल-अपराध के पाँच कारण बताइये।
6. मद्यव्यसनता क्या है? इसके पाँच दुष्परिणाम बताइए।
7. ड्रग व्यसन क्या है? इसके पाँच दुस्परिणाम बताइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1

1. गलत 2. सत्य 3. सत्य
4. सत्य 5. सत्य

21.2

(i) नहीं प्राप्त (ii) असामाजिक (iii) हानिप्रद
(iv) बनते (v) नहीं जाते

21.3

1. द 2. द 3. द
4. द 5. द

21.4

1. हाँ 2. हाँ 3. हाँ
4. हाँ 5. हाँ

21.5

(i)-e (ii)-d (iii)-c
(iv)-b (v)-a

21.6

1. e 2. d 3. b
4. a 5. c